अथवा

खड़ी हो गई चाँपकर, कंकालों की हूक।
नभ में विपुल विराट-सी, शासन की बंदूक॥
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक।
जिसमें कानी हो गई, शासन की बंदूक॥
बढ़ी बधिरता दसगुनी, बने विनोबा मूक।
धन्य-धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक॥
सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक।
जहाँ-जहाँ दगने लगी, शासन की बंदूक॥

अथवा

चौड़ी सड़क गली पतली थी,
दिन का समय घनी बदली थी,
रामदास उस दिन उदास था,
अंतः समय आ गया पास था,
उसे बता, यह दिया गया था, उसकी हत्या होगी।
धीरे-धीरे चला अकेले,
सोचा था किसी को ले ले,
फिर रह गया, सड़क पर सब थे,
सभी मौन थे, सभी निहत्थे
सभी जानते थे यह, उस दिन उसकी हत्या होगी।

2. सिद्ध कीजिए कि 'असाध्य वीणा' एक लंबी कविता है। उसके काव्य- सौन्दर्य का मूल्यांकन भी कीजिए। 10

अथवा

नई कविता के सन्दर्भ में अज्ञेय के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

Roll No. .....

DD-353

M. A. (Second Semester) EXAMINATION, May-June, 2020

HINDI

Paper Seventh

(आधुनिक काव्य—2)

(प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता एवं समकालीन कविता)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 30

(अ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में,
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं
न वीणा का था
वह तो सब कुछ की तथता थी
महाशून्य

वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

अथवा

यह दीप अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पर्वत को दे दो।
यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गाएगा ?
पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लाएगा ?
यह समिधा : ऐसी आग हटी की बिरला सुलगाएगा।
यह अद्वितीय : यह मेरा 'यह मैं स्वयं विसर्जित'।

(ब) मैं इस बरगद के पास खड़ा हूँ।
मेरा यह चेहरा
घुलता है जाने किस अथाह गम्भीर, साँवले जल से,
झुके हुए गुमसुम टूटे हुए घरों के
तिमिर अतल से
घुलता है मन यह।
रात्रि के श्यामल ओस से क्षालित
कोई गुरु-गम्भीर महान् अस्तित्व
महकता है लगातार
मानो खँडहर-प्रसारों में उद्यान
गुलाब-चमेली के, रात्रि-तिमिर में,
महकते हों, महकते ही रहते हों हर पल।

अथवा

भागता मैं दम छोड़,
घूम गया कई मोड़,
ध्वस्त दीवालों के उस पार कहीं पर
बहस गरम है
दिमाग में जान है, दिलों में दम है
सत्य से सत्ता के युद्ध को रंग है,
पर कमजोरियाँ सब मेरे संग हैं,
पाता हूँ सहसा—
अंधेरे की सुरंग-गलियों में चुपचाप
चलते हैं लोग-बाग
दृढ़पद गम्भीर,
बालक युवागण
मन्दगति नीरव
किसी निज भीतरी बात में व्यस्त हैं,
कोई आग जल रही तो भी अन्तःस्थ।

(स) कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गयी उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास का
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर
कौन बताए वह छायामय
बरसा पड़ा होगा न यहीं पर

3. मुक्तिबोध गहन मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों और तीखे सामाजिक अनुभवों के कवि हैं। सिद्ध कीजिए। 10

अथवा

नई कविता की काव्यगत विशेषताओं के संदर्भ में मुक्तिबोध के काव्य की समीक्षा कीजिए।

4. नागार्जुन का काव्य राष्ट्रीय भावना तथा विद्रोह का प्रतीक काव्य है। स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रघुवीर सहाय के काव्य में मूल्यगत चेतना को स्पष्ट करते हुए, इनकी काव्यगत विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 10

(i) केदारनाथ अग्रवाल के प्रगतिवादी विचार

(ii) त्रिलोचन शास्त्री की ठेठ भारतीयता

(iii) विनोद कुमार शुक्ल का व्यक्तित्व

(iv) प्रगतिवादी **दो** प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

(v) धूमिल के काव्य की विशेषताएँ

(vi) भवानी प्रसाद मिश्र की भाषा

(vii) नई कविता की विशेषताएँ

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दस** प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 10

(i) नागार्जुन का पूरा नाम लिखिए।

(ii) 'तारसप्तक' के संपादक कौन थे ?

(iii) मुक्तिबोध किस वाद के कवि थे ?

(iv) असाध्यवीणा के काव्य नायक का नाम बताइए।

(v) 'कोयल आज बोली है' कविता के कवि कौन हैं ?

(vi) 'अंधेरे में' कविता किस शिल्प में लिखी गई है ?

(vii) 'सतपुड़ा के जंगल' किसकी कविता है ?

(viii) 'राहों का अन्वेषी' किन कवियों को कहा जाता है ?

(ix) 'बावरा अहेरी' में अहेरी किसका प्रतीक है ?

(x) **दो** प्रमुख प्रगतिवादी समीक्षकों के नाम बताइए।

(xi) 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' किसकी रचना है ?

(xii) रघुवीर सहाय की **दो** काव्य-कृतियों के नाम लिखिए।

(xiii) लघुमानव का क्या अर्थ है ?

(xiv) 'अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे।
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब।'
ये पंक्तियाँ किसकी हैं ?

(xv) 'धूमिल' का वास्तविक नाम क्या है ?